International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 65-68

# वैदिक साहित्य संस्कृति और रीति–रिवाज के संदर्भ में

डॉ. ज्योति जोशी*

***सार***

*.''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्''*

*वैदिक साहित्य भारत का सबसे प्राचीन साहित्य है। यह साहित्य विशाल और सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान को अपने अन्दर समाहित किये हुए हैं। वेद भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं ये मानव जाति के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं विश्व को संस्कृति देने का श्रेय वेदों को ही जाता है। हमारी संस्कृति तथा रीति–रिवाज वेदों पर ही टीके हुए हैं। वेदों से ही राष्ट्र की प्रशासनिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यापारिक नीतियों का आधार है, जो हमें अपने पूर्वजों से अर्थात् ऋषि–मुनियों से प्राप्त है। वेद आध्यात्मिक ज्ञान के आधार है। धर्म का मूल और समस्त ज्ञान से युक्त हैं। चारों वर्ण, तीनों लोक, चारों आश्रम, भूत, वर्तमान, और भविष्य इन सबका परिज्ञान वेद से होता है। इसी के आधार पर हम वैदिक युग को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।*

- *पूर्व वैदिक युग और*
- *उत्तर वैदिक युग।*

*पूर्व वैदिक युग में केवल वेद की चार संहिताएं आती है और उत्तर वैदिक युग में ब्राह्मण ग्रन्थों से लेकर छः वेदांगों तक का साहित्य रखा जा सकता है। इन्हीं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। ये सभी सर्वाधिक पवित्र माने जाने वाले ग्रंथ हैं। मनुस्मृति में स्पष्टतः कहा गया है कि धर्म विषयक जिज्ञासा के समापन के लिए श्रुति ही प्रमाण है–*

*''धर्म जिज्ञास्यमानाना प्रमाण परमं श्रुतिः''*

***शब्दकोशः*** *वेद, वैदिक–युग, ऋषि–मुनि, आध्यात्मिक उत्तर और पूर्व,जिज्ञासा, श्रुति।*

---

## प्रस्तावना

## वेदों की उपयोगिता

''अग्निमीले पुरोहितम्'' यह ऋग्वैदिक संहिता के प्रथम मंत्र का मन्त्रांश है, जो विश्व के धर्मों में अग्नि एवं कर्मकाण्ड की महत्ता की सूचना देता है। विश्व धर्मों में प्रकृति पूजा के आलोक में इन दो पदार्थों को किसी न किसी रूप में अवश्य ही अपनाया गया है। विश्व सभ्यता, विश्व संस्कृति, विश्व के मानव इतिहास एवं विश्व में मान–जीवन मूल्य की प्रारंभिक स्थिति को समझने के लिए वैदिक साहित्य का योगदान सर्वमान्य है।

आज स्थिति यह है कि विश्व की मानव–सभ्यता का इतिहास वैदिक साहित्य को अनदेखा कर नहीं चल सकता, न मकोई समाजशास्त्री इसकी अनदेखी कर सकता है। जहाँ तक भारतीयों का प्रश्न है, वे तो वैदिक जीवन पद्धति से इतने गहरे रूप से सम्बद्ध हैं कि उनकी सोच, भावना, धार्मिक प्रवृत्तियाँ एवं जीवन पद्धतियाँ वैदिक संस्कारों से सुम्बद्ध प्रतीत होती है। इस प्रकार तुलनात्मक भाषा विज्ञान धर्म विज्ञान, भौतिक विज्ञान इत्यादि के अध्ययन के लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन परमावश्यक है। समस्त वैदिक साहित्य को संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् आदि भागों में विभाजित कर सकते हैं।

* सहायक आचार्य, एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सांगानेर, जयपुर, राजस्थान।

- **संहिता :–** जो कि मंत्र, प्रार्थना स्तवन, आशीर्वाद यज्ञ विषयक मंत्रों के संग्रहात्मक सूक्त। दूसरे शब्दों में, मंत्रों के समुदाय का नाम ही संहिता है।
- **ब्राह्मण :–** यज्ञ संबंधी विधान रीतियां एवं यज्ञोत्सव विषयक समस्त वैदिक ज्ञान के संग्रहात्मक मंत्र ब्राह्मण है। प्राधान्येन ब्राह्मण ग्रन्थों का लक्ष्य यज्ञ का विस्तारपूर्वक वर्णन करना ही है।
- **आरण्यक :–** आरण्यक तथा उपनिषद दोनों ही ब्राह्मण ग्रंथों के निकटवर्ती है। आरण्यक साहित्य में यज्ञों के आध्यात्मिक रूप का वर्णन है। ये जन–समाज से दूर वनों में पढ़े जाने के कारण ही आण्यक कहलाते हैं। आरण्यक वानप्रस्थियों के लिए है।
- **उपनिषद् :–** वैदिक साहित्य का अंतिम भाग उपनिषद् हैं इसे वेदान्त भी कहते हैं। उपनिषद ग्रन्थों में आत्मज्ञान, मोक्षज्ञान और ब्रह्मज्ञान की प्रधानता होने के कारण इसे आत्मविद्या, मोक्षविद्या और ब्रह्म विद्या भी कहा जाता है। ऋषियों के चिनतन और मनन का साकार रूप है। इस ग्रन्थ में दार्शनिक चिन्तन का गहन विवेचन हुआ है।

इन समस्त संहिताओं का संकलन यज्ञों की आवश्यकताओं के अनुरूप वेदव्यास मुनि ने किया था। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् भी पृथक्–पृथक् किसी न किसी वेद से अवश्य संबंधित है। वैदिक संस्कृति में मानव जीवन उल्लासमय तथा आशामय था। ऋग्वेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद में समस्त ब्रह्माण्ड को ही महामानव की संज्ञा दी है। विराट पुरूष का वर्णन करते हुए कहा है–

चन्द्रसा मनसो जातः चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखदिन्द्रष्चाग्निश्च प्राणाद वायुरजायत।।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समर्वतत।

पदाभ्यां भूमिर्दिष : श्रोतातः।

अर्थात् सूर्य उसका नेत्र है, चन्द्रमा उसका मन है, अग्नि उसका मुख है, वायु उसका प्राण है, अन्तरिक्ष उसकी नाभि है।

द्युलोक उसका सिर है, पृथ्वी उसका पैर है, दिशाएं उसका कान है। समाज का निर्माण इसी महामानव ब्रह्मा से हुआ है। अथर्ववेद के मंत्र में प्रकृति के विभिन्न तत्वों में निहित प्रसादनी शक्ति को अपने मन में आविर्भूत होने की कामना के लिए एक मंत्र में कहा गया है:–

पश्येम शरदः शतम्। जीवेम शरदः शतम्।

बुध्येम शरदः शतम्। सेटेम शरदः शतम्।

पूषेन शरदः शतम्। भवेम शरदः शतम्।

भवेम शरदः शतम्। भूयसी शरदः शतम्।

अर्थात् सौ वर्ष से भी अधिक जीने, देखने, सुनने, ज्ञानावर्जन करने, बढ़ने, पुष्ट होने और आनन्दमय जीवन की कितनी कमनीय कामना है। जीवन के विषय में यह सुखद स्वरूप, भव्य और स्वर्गीय भावना कितनी उत्कृष्ट है। भारतीय संस्कृति की लम्बी परम्परा में यह निःसंदेह अद्वितीय है और गंगा की लम्बी धारा की परम्परा में गंगोत्तरी के जल के समान दिव्य और पवित्र है। वैदिक साहित्य के कुछ मूलाधार तत्व भारतीय संस्कृति के निर्माण में सहायक है।

- **आध्यात्मवाद :–** वैदिक संस्कृति की प्रथम मूलाधार ऋत और सत्य की भावना है। समस्त संसार प्राकृतिक शक्तियों के अधीन नियमानुकूल चलायमान है। इन नियमों में कही वैषम्य नहीं हैं। इसी विषमता के अभाव को ऋत कहा जाता है। मानव जीवन के प्रेरक तत्वों का नाम सत्य हैं ईश्वर सर्वव्यापक हैं अर्थात् पांच तत्वों पर एक महान् शक्ति का शासन हैं

- **त्यागभाव :–** वैदिक संस्कृति का दूसरा मूलाधार त्यागभाव है। संसार का भोग त्यागभाव से करना चाहिए। मानव मात्र को अशान्ति से शान्ति की ओर त्याग भाव का 'मागृधः कस्यस्विद्धम्' का उपदेश ले जाने का यत्न करता है।
- **कर्मवाद :–** वैदिक संस्कृति का आधार कर्मवाद हैं कर्मशील रहते हुए सौ वर्ष जीवन की कामना। कर्मयोग के अतिरिक्त जीवन साफ्ल्य का अन्त कोई श्रेष्ठ मार्ग नहीं है। श्रीमान् भगवत् गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही उपदेश दिया है। निष्कर्मण्यता पाप एवं अभिशाप है। श्रम न करने से आयुक्षीण होती है। इस प्रकार कर्मवाद मानव को कर्मण्यता तथा आशावाद का संदेश देता है। यह कर्म ही जीवन है।
- **आत्मविश्वासः**– वैदिक संस्कृति का आधार आत्म–विश्वास है, आत्मा का हनन करना पाप है। आत्मविश्वास के बिना जीवन व्यर्थ है। इस बौद्धिक एवं कर्म संघर्षरत युग में मानव की अशान्ति का मूल कारण आत्मविश्वास की उपेक्षा ही है।
- **पुनर्जन्मवाद :–**वैदिक संस्कृति का तत्व एक पुनर्जन्मवाद है। यह पारलौकिक भावना ही मानव को शुभ आचरण करने का उपदेश देती हैं। 'अयमेव लोकः न परःअपि' मानव सदाचार आदि का पालन करता हुआ अगले जीवन को सुखद बनाने की चेष्टा करता है।
- **विश्वबन्धुत्व :–** वैदिक संस्कृति में विश्वबन्धुत्व की भावना की अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी आधार पर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' तथा 'आत्मवत्सर्वभूतेषु' की भावना परवर्ती काल से पल्लवित हुई। उदाहरण स्वरूप कृष्ण–सुदामा की मैत्री जो कि भारतीय इतिहास में अमर है।

  वैदिक संस्कृति विश्व को सुपथ का मार्ग अपनाने का उपदेश देती हैः–

  ''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।

  मृत्योर्मा अमृतं गमयेति।''
- **सहिष्णुता :–** आर्य–अनार्य संषघ के उपरान्त अनार्यों का मिलन सहिष्णुता का ही परिचायक है। भारत अनेक जातियों का एक राष्ट्र है तथा अनेक धर्मों का एक धर्म है। वही उसी प्रकार जैसे समुद्र नदियों (जल) का घर होता हैं स यथा सर्वासामपाँ समुद्र मे कायनम् पुरूषार्थ–चतुष्टय– सर्वांगीण अभ्युदय का इस संस्कृति में विशेष महत्व है। इसलिए पुरूषार्थ चतुष्ट्य धर्म, अर्थ काम, मोक्ष को समान भाव से महत्त्व है।
- **आशावाद :–** वैदिक संस्कृति एवं साहित्य आशावादी भावाओं से अनुप्रणित है। यत्र–तत्र–सर्वत्र जीवन के अभ्युदय एवं सौ वर्ष जीने की कामना वेद मंत्रों से मिलती है। समस्त वैदिक साहित्य अमृतम्य, प्राण संजीवन वचनों से सम्भूत है।
- **सामाजिक स्थिति :–** वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति उन्नत दशा में थी। परिवार में पितृ प्रधान सत्ता थी। एक–पत्नी प्रथा थी। बहु पत्नी प्रथा भी अज्ञात न थी। पत्नी गृहस्वामिनी थी। गृहपति का पद वंशानुगत था। वही सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता है। पशु, अश्व, स्वर्ण आभूषण अस्त्र, दास आदि व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप में माने जाते थे। सामाजिक संगठनों में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान था। कुमारी अवस्था में वह पिता भ्राता के संरक्षण मे रहती थी। तत्पश्चात् पति के, पति के अभाव मे पुत्र के। पर्दाप्रथा नहीं थी। स्त्रियों को शिक्षा दी जाती थी। वे विदुषी होती थी। आदर्श विवाह केवल एक माना जाता था। विवाह पर आज के समान उत्सव मनाये जाते थे। वस्त्र युगानुकूल ही थी। आभूषण प्रथा भी प्रचलित थी। नारियां साज–शृंगार भी खूब करती थी। पुरूष बड़े–बड़े बाल, दाढ़ी रखते थे। ऋग्वेद में एक स्त्री चार वेणियां रखती थी। भोजन में दूध का महत्त्व था। दही धृत का भी प्रयोग होता है। ''क्षीरपक्वमौदकम् भी थी। मधुर पेय सोम था, जिसके गुणगान में ऋग्वेद का नवम् मण्डल भरा हैं आमोद–प्रमोद के साधनों मे रथ–दौड़, घुड़–दौड़, नृत्य संगीत प्रमुख थे। जुआ भी वैदिक–साहित्य में उल्लेखनीय है। वाद्य–यंत्रों में दुन्दुभी, वेणु आदि का उल्लेख मिलता हैं मनुष्य सदाचारी थी। समास में सुख शान्ति थी। वैदिक काल में जनतंत्र की भावना और जनता का भी अपने राज्य शासन में महत्त्वपूर्ण स्थान था। राष्ट्रीय उन्नति के लिए वांगीण उन्नति की सर्वत्र कामना है।

आर्थिक व्यवस्था का मूलधार वैदिक काल में पशुपालन, कृषि थी। वैदिक काल में मुख्य देवता द्यौ, पृथ्वी, वरूण, इन्द्र की पूजा होती थी। मनुष्य अपने देवों को प्रसन्न रखने के लिए प्रार्थनाएँ करते थे। दध, धृत, सोम, तथा अन्य खाद्यान्न उनके नाम से यज्ञों में हविष्य देते थे। यज्ञों को प्रधानाता प्राप्त थी। यज्ञों में होता नामक ऋत्विज उच्च स्वर से सामगान करता था। वैदिक साहित्य में नैतिक पर बल दिया गया है। नैतिक आदर्शों की महानता पर ही धर्म की श्रेष्ठता प्रतिष्ठित थी।

इस प्रकार हम निःसंदेह कह सकते है कि चिरन्तन काल से वेद भारतीय संस्कृत के प्रकाश स्तम्भ रहे हैं। भारतयी समाज के संगठन और उसकी जीवन चर्चा के नियम और व्यवस्थापन के साथ–साथ उसकी आध्यात्मिक कथा अन्य उदान्त भावनाओं की प्रेरणा में भी वेद का प्रमुख स्थान रहा है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. देवेन्द्रनाथ पाण्डेय
2. वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. राकेश मणि त्रिपाठी, प्रो. (डॉ.) सोहनराज तातेड़
3. वैदिक साहित्य का इतिहास– कुंवर लाल जैन
4. वैदिक साहित्य का इतिहास– पं. बलदेव उपाध्याय
5. वैदिक सूक्त मुक्तावली– प्रो. युगल किशोर मिश्र
6. ऋग्वेद– 10.10, 13–14
7. अथर्ववेद–
8. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. कर्ण सिंह।

❖◆❖